1. मन का 'आकारात्मक पहलू' या 'चेतना के तीन स्तर' (Topographical aspects of mind or three levels of consciousness)—फ्रायड के अनुसार मन के तीन स्तर हैं—(क) चेतन (conscious) (क) अर्द्धचेतन (subconscious) एवं (ग) अचेतन (unconscious)।

(क) चेतन (Conscious)—चेतन का संबंध हमारे वर्तमान चिंतन (current thoughts) और जो हम अभी अनुभव करते हैं, से है। फ्रायड के अनुसार, यह हमारी चेतना (conscious) स्तर को अगर दस भागों में बाँटा जाए तो इसका केवल सबसे ऊपरी दसवाँ भाग चेतन है।

(ख) अर्द्धचेतन (Pre or subconscious)—चेतन के ठीक नीचे चेतना का एक बड़ा हिस्सा अर्द्धचेतन है। इसमें हमारी स्मृतियाँ रहती हैं जिनका संबंध हमारे वर्तमान चिंतन से नहीं रहता है और उनको आसानी से चेतन में नहीं लाया जा सकता है। जैसे—हम कभी-कभी अपने मित्र या निकट संबंधी का नाम याद करने में असमर्थ हो जाते हैं, लेकिन बाद में स्वतः इनके नाम का स्मरण हो जाता है। जब हम वर्तमान में नाम का स्मरण करना चाहते हैं तो उस समय वह हमारी अर्द्धचेतना में रहती है।

(ग) अचेतन (Unconscious)—अर्द्धचेतन के ठीक नीचे अचेतन अवस्थित है। यह हमारी चेतना (consciousness) स्तर का सबसे बड़ा भाग हैं। इसके अंतर्गत हमारे विचार (thought), इच्छा एवं आवेग (impulse) जिसके बारे में वर्तमान में हम ज्यादातर अनभिज्ञ रहते हैं, आते हैं। कुछ तो सदा अचेतन (unconscious) रहते हैं।

Scanned with CamScanner

भंडार (storehouse) है।

2. 'फ्रायड' के व्यक्तित्व संबंधी त्रिस्तरीय अवधारणा (Freud's threefold conception of personality)—'फ्रायड' के अनुसार व्यक्तित्व के निम्नलिखित तीन प्राथमिक संरचनात्मक तत्त्व होते हैं—(क) इदम या 'इड' (Id), (ख) अहं (Ego) एवं (ग) पराहं (Superego)।

(क) इदम या इड (Id)—यह प्रायः नवजात शिशु में पाया जाता है और धीरे-धीरे उसमें अहं और पराहं का विकास होता है।

इसके अंतर्गत हमारी सारी (inherited) मूल प्रवृत्तियाँ जैसे लैंगिक एवं आक्रामक एवं अतृप्त इच्छाएँ जिनका दमन कर दिया जाता है, आते हैं। इनका जैविक प्रक्रियाओं से बहुत निकट का संबंध है। ये हमें 'कामशक्ति' जिसको फ्रायड ने 'लिबिडो' (Libido) कहा है, देती है। इसका संबंध वर्तमान वातावरण से नहीं रहता है। फ्रायड के अनुसार व्यक्ति के जीवन एवं मृत्यु संबंधी मूल प्रवृत्तियाँ (life and death instincts) 'इड' में रहती है। यह सुखेप्सा सिद्धांत (Pleasure principle) से निर्देशित (guided) होते हैं।

(ख) अहं (Ego)—अहं का विकास इड (Id) के बाद या उसके अंदर से होता है। यह वास्तविक संसार का सामना करता है। यह इड (Id) की इच्छाओं की पूर्ति नहीं होने देता है। यह 'वास्तविकता सिद्धांत' या 'यथार्थवादी सिद्धांत' (reality principle) पर आधारित है। यह विशेष रूप से व्यक्तित्व (personality) के 'कार्यपालक' का काम करता है।

यह इड की माँगों, संसार की वास्तविकताओं एवं पराहं की माँगों के बीच मध्यस्थता करता है। जब ऐसा करने में यह सक्षम या सफल नहीं होता है तो उसमें कुसमायोजन (maladjustment) संबंधी अनेक समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। इसके ठीक विपरीत अगर अहं का इड एवं पराहं के साथ समन्वय स्थापित हो जाता है तो व्यक्ति का जीवन संतुलित हो जाता है।

(ग) पराहं (Superego)—यह हमारे जीवन के मूल्यों एवं आदर्श या नैतिकता से संबंधित हैं जो हमें अपने माता-पिता, सगे-संबंधियों, शिक्षकों या समाज के अन्य पूज्य एवं प्रतिष्ठित लोगों से प्राप्त होता है।

यह इड की इच्छाओं की तृप्ति को नियंत्रित करता है और इन्हें अहं में जाने नहीं देता है। इसका संबंध हमारी नैतिकता (morality) एवं सही और गलत (right or wrong) से है। यह अहं की सिर्फ उन्हीं इच्छाओं की पूर्ति कर देता है जो नैतिकता के आधार पर सही है।

Scanned with CamScanner

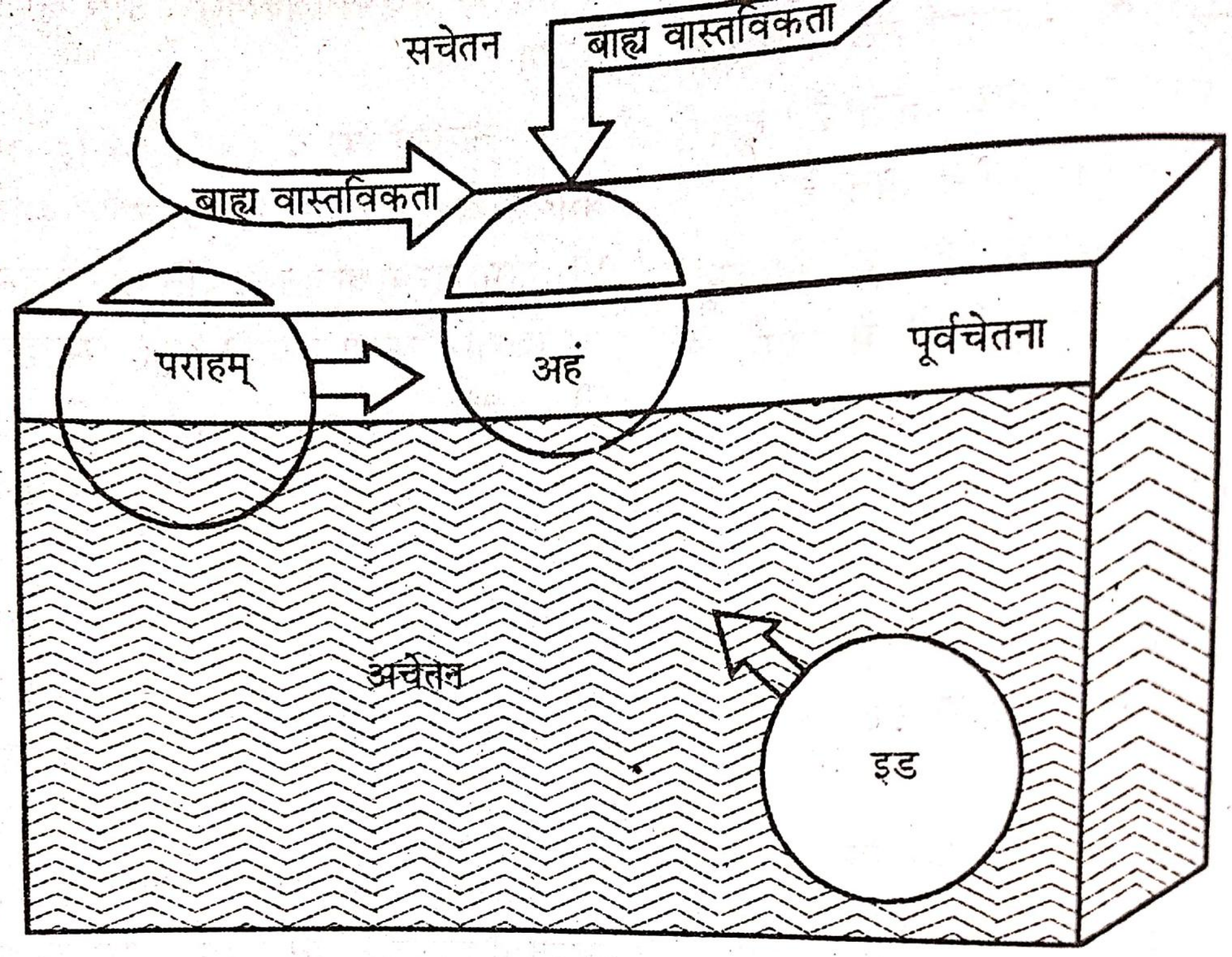

Scanned with CamScanner